"अध्यात्म का खेल"

1. “परमातम” और “जीव” बीच,
यह अध्यात्म का खेल ।
अज्ञानी सब चर्चा करें,
ज्ञानी खेलें खेल ।।

2. सभी जीव और धार बिच,
लुका-छिपी का खेल ।
पहली बारी “जीव” की,
खोज के करना मेल ।।

3. खोज लिया, राजा बना,
जीत लिया संसार ।
माया चेरी बन गयी,
जीव बन गया धार ।।

4. अज्ञानी सब रह गये,
खेला नहीं है खेल ।
माया और भव जल पड़े,
कोई हुआ न मेल ।।

5. दूसर बारी “धार” की,

“जीव” को खोजे धार ।

धार, खोज पाया नहीं,

जीव हो गया धार ।।

6. सात स्वर्ग में है नहीं,

न बैकुंठ निवास ।

सात शरीरों में नहीं,

है वह सबसे पास ।।

7. तत्वों में मत खोजना,

नहीं है कोई लोक ।

नाम, रूप कुछ है नहीं,

एक, अनाम, अलोक ।।

8. जिन-जिन खोजा, पाइयाँ,

कहते उनको सन्त ।

ऐसा है वह जान लो,

जिसका आदि न अन्त ।।

9. ब्रह्म लोक उससे बना,

बने सभी है देव ।

सबका मालिक एक वह,

खोजो नहीं त्रिदेव ।।

10. ध्यान, भजन की पहुँच नहिं,

नहिं भक्ती, नहिं योग ।

इनसे नहिं पहुँचो वहाँ,

सबसे होय वियोग ।।

11. हर जगह मौजूद है,

स्पर्श वह करता नहीं ।

अन्दर, बाहर खोज मत,

खोज से मिलता नहीं ।।

12. संसार का चक्कर लगाता,

फिर रहा है जान तू ।

चक्कर लगाना खुद का है,

पहचान खुद की जान तू ।।

13. दृष्टि विवेक से दिखे वह,

दिखे न मन की आँख ।

प्रज्ञा चक्षु से दिखे नहिं,

दिखे न तन की आँख ।।

14. आतमघट तो है नहीं,

मिले वो कैसे धार ।

“आतमघट” परगट करो,

लखो तुरत वह धार ।।

15. आतमघट ही मुख्य है,

इस अध्यात्म के खेल ।

जीव, धार मिलि एक हों,

पूरण हो यह खेल ।।

16. दो बातें कैसे हुई,

क्या है इसका भेद ।

इसका निर्णय खुद करो,

तभी मिटे यह खेद ।।

17. कहते हैं वो हर जगह,

तो कैसे स्वर्ग में नाहिं ।

अन्दर, बाहर क्यों नहीं,

वह किस घट के माहिं ।।

18. यहाँ सभी है चल रहा,

चल रही सारी सृष्टि ।

तभी नज़र आता नहीं,

खुली नहीं वह दृष्टि ।।

19. सात लोक हैं चल रहे,

भव जल उठे तरंग ।

भव जल जब तक थिर नहीं,

तब तक दिखे न संग ।।

20. जितना सब है चल रहा,

यह सब भव जल होय ।

भव जल को स्थिर करो,

प्रकट आतमघट होय।।

21. भव जल कैसे शांत हो,

इसका क्या सिद्धांत ।

देव, बह्म और लोक सब,

कैसे होवें शांत ।।

22. भाव, विचार और मन सुरत,

सम हो, स्थिर, शांत ।

देव, ब्रह्म और लोक सब,

भव जल खुद ही शांत ।।

23. दृष्टि विवेक की तब खुले,
जब घट परगट होय ।
केवल मन सन्मुख करो,
खुद ही परगट होय ।।

24. भाव, विचार और मन सुरत,
स्थिर कैसे होंय ।
जतन कौन स्थिर करें,
सम कैसे यह होय ।।

25. वर्तमान में मन करो,

सुरत को दो ठहराय ।

आतमघट तब प्रकट हो,

धार मिले खुद आय ।।

26. वर्तमान में कस रुके,

मन यह चंचल होय ।

भूत, भविष्य में जाय नहिं,

वर्तमान ही होय ।।

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)